रमजान की फजीलत

रमजान मुबारक का महीना बड़ी फ़ज़ीलत और अहमियत का हामिल है मुसलमानों पर इस मुबारक महीने के रोज़े फ़र्ज़ किये गए हैं इरशाद ए खुदाबंदी है

"ऐ ईमान वालों तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए हैं जैसे तुम से पहले वाले लोगों पर फ़र्ज़ किये गए थे"

रोज़े की अहमियत तो इसी से वाज़ेह है के ये इस्लाम के पांच अरकान में से एक रुक्न है नबी ए करीम का फरमान है

"इस्लाम की बुनियादें पांच चीज़ों पर हैं

1 -इस बात की गवाही देना के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं

2 -नमाज़ क़ायम करना

3 -ज़कात अदा करना

4 -अल्लाह के घर का हज करना

5 -रमजान मुबारक के रोज़े रखना

इसी मुबारक महीने में क़ुरान ए पाक का नुज़ूल हुआ इरशाद ए खुदावन्दी है

"रमजान का महीना जिस में क़ुरान उतरा लोगों के लिए हिदायत और रहनुमाई और फैसले की रौशन बातें तो तुम में से जो कोई ये महीना पाए ज़रूर इसके रोज़े रखे"

इस मुबारक महीने में एक बरकत वाली रात आती है जिसे शब् ए क़द्र कहते हैं जिसके बारे में इरशाद ए खुदावन्दी है

"शब् ए क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर इसमें फरिश्ते और जिबरील उतरते हैं अपने रब के हुक्म से हर काम के लिए "

हुज़ूर नबी ए करीम ने फ़रमाया

"जन्नत में आठ दरवाज़े हैं उन में एक दरवाज़े का नाम रय्यान है उस दरवाज़े से वही जाएंगे जो रोज़े रखते हैं

रोज़े के अहकाम

1.रोज़ा नमाज़ की तरह ही फ़र्ज़ ए ऐन है इसकी फ़र्ज़ियत का इनकार करने वाला काफिर और बिला उज़्र (बिना किसी शरई वजह) से छोड़ने वाला सख्त गुनहगार दोज़ख का सज़ावार है

2.शरीयत में रोज़े के मायने हैं अल्लाह की इबादत की नियत से सुबह सादिक़ से लेकर सूरज ग़ुरूब यानी डूबने तक खाने पीने और जिमा(हमबिस्तरी) से अपने आप को रोक लेना

3.रमज़ान के रोज़े की नियत का वक़्त सूरज डूबने से लेकर सूरज के निस्फ़ निहार पर पहुँचने से पहले तक है अगर किसी ने इसके बाद नियत की तो रोज़ा नहीं होगा

4. रमज़ान के हर रोज़े के लिए नयी नियत की ज़रुरत है याद रहे नियत दिल के इरादे का नाम है अलबत्ता ज़ुबान से नियत कर लेना अच्छा है

5.रोज़े के तीन दर्जे हैं एक आम लोगों का रोज़ा के यही पेट और खाने पीने जिमा से रुकना , दूसरे खास लोगों का रोज़ा के उनके अलावा कान, आँख, ज़ुबान, हाथ, पाओं और तमाम आज़ा को गुनाह से बाज़ रखना और तीसरा खास में से भी खास लोगों का के अल्लाह के सिवा (यानी क़ायनात की हर चीज़) से अपने को बिलकुल जुदा करके सिर्फ उसी की तरफ मुतवज्जेह रहना

6.रमज़ान में बिला उज़्र जो शख्स एलानिया खाये पिए तो हुक्म है के उसे क़त्ल कर दिया जाये

रोज़े के मकरूहात

1.झूट ग़ीबत चुगली गाली देना बेहूदा बातें करना किसी को तकलीफ देना ये चीज़ें वैसे भी नाजाइज़ व हराम हैं रोज़े में और ज़्यादा हराम और उन की वजह से रोज़ा भी मकरूह होता है

2.कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाने में मुबालगा करना मकरूह है कुल्ली करने में मुबालगे का मायने हैं भर मुँह पानी लेना

3.परेशानी ज़ाहिर करने के लिए भीगा कपड़ा लपेटना मकरूह है इसलिए के इबादत में दिल तंग होना अच्छी बात नहीं

4.मुँह में थूक इकठ्ठा करके निगल जाना बगैर रोज़े के भी अच्छा नहीं और रोज़े में तो ये मकरूह है

नोट:रोज़े में मिस्वाक करना मकरूह नहीं बल्कि सुन्नत है

सहरी और इफ्तार

हुज़ूर नबी ए करीम ने इरशाद फ़रमाया

"सहरी खाओ के सहरी खाने में बरकत है ,हमारे और अहले किताब के रोज़ों में फ़र्क़ सहरी का लुक़मा है"

और दूसरी हदीस में है

"अल्लाह और उसके फ़रिश्ते सहरी कहने वालों पर दुरूद भेजते हैं"

और एक हदीस में है

"अल्लाह तआला फरमाता है के मेरे बन्दों में मुझे ज़्यादा प्यारा वो है जो इफ्तार में जल्दी करता है

सहरी खाना और उसमे देर करना सुन्नत है मगर इतनी देर मकरूह है के सुबह सादिक़ शुरू हो जाने का शक हो जाये

इफ्तार में जल्दी करना सुन्नत है मगर इफ्तार उस वक़्त करे जब सूरज डूब जाने का इत्मिनान हो जाये, हुज़ूर नबी ए करीम ने फ़रमाया

"जब कोई रोज़ा इफ्तार करे तो खजूर या छुआरे से इफ्तार करे के वो बा बरकत है और अगर न मिले तो पानी से के वो पाक करने वाला है

तरावीह के मसाइल

रमज़ान मुबारक का महीना आते ही तरावीह की बहारें भी आ जाती है तरावीह वो बीस रकअत सुन्नत ए मोकदा नमाज़ें हैं इशा की फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ी जाती हैं इसे छोड़ने वाला सज़ा का मुस्तहिक़ है इसके कुछ खास मसाइल हमारे लिए जानना बहुत ज़रूरी हैं

1.तरावीह की जमाअत सुन्नत ए किफ़ाया है अगर मस्जिद के सब लोगों ने छोड़ दी तो सब गुनहगार होंगे और कुछ लोगों ने जमाअत से मस्जिद में पढ़ ली तो सब बरी उज़ ज़िम्मा हो गए

2.जिस ने इशा की फ़र्ज़ नमाज़ तनहा पढ़ी और तरावीह जमाअत से पढ़ी तो वो वित्र तनहा पढ़े

3.जिस ने इशा की फ़र्ज़ नमाज़ नहीं पढ़ी वो न तरावीह पढ़ सकता है न वित्र जब तक फ़र्ज़ अदा न करे

4.बिला उज़्र बैठ कर तरावीह पढ़ना मकरूह है बल्कि बाज़ फुक़्हा ए इकराम के नज़दीक तो नमाज़ होगी ही नहीं

5.कुछ लोग शुरू रकअत से शरीक नहीं होते बल्कि जब इमाम रुकू में जाने लगता है तो शरीक होते हैं ऐसा करना नाजाइज़ है ऐसा हरगिज़ नहीं करना चाहिए के इसमें मुनाफ़िक़ों से मुशाबिहत पायी जाती है

6.हाफ़िज़ को उजरत देकर तरावीह पढ़वाना न जाइज़ है देने वाला और लेने वाला दोनों गुनहगार हैं उजरत सिर्फ यही नहीं के पहले से मुक़र्रर करलें के ये लेंगे ये देंगे बल्कि अगर मालूम है के यहाँ कुछ मिलता है अगरचे उस से तय न हुआ हो ये भी न जाइज़ है, हाँ अगर कह दे के कुछ नहीं दूंगा या नहीं लूंगा फिर पढ़े और लोग हाफ़िज़ को कुछ बतौर खिदमत व मदद के दें तो इस में कुछ हर्ज नहीं

सदका ए फ़ित्र

हुज़ूर नबी ए करीम ने इरशाद फ़रमाया

बन्दे का रोज़ा आसमान और ज़मीन के बीच रुका रहता है जब तक सदक़ा ए फ़ित्र अदा न करे

1.सदक़ा ए फ़ित्र वाजिब है ईद के दिन सुबह सादिक़ शुरू होते ही सदक़ा ए फ़ित्र वाजिब हो जाता है

2.सदक़ा ए फ़ित्र हर मुसलमान आज़ाद मालिक ए निसाब पर वाजिब है इसमें आक़िल बालिग और माल ए नामी होने की शर्त नहीं यानि माल पर साल गुज़रना शर्त नहीं

सदक़ा ए फ़ित्र की मिक़्दार- गेंहू या उस का आटा 2 किलो 47 गिराम या उस के बराबर क़ीमत अदा करना चाहिए

3.जिन लोगों को ज़कात देना जाइज़ है उन को सदक़ा ए फ़ित्र देना भी जाइज़ है और जिन लोगों को ज़कात देना जाइज़ नहीं उन को सदक़ा फ़ित्र भी देना जाइज़ नहीं

आइये मिलकर मज़हब अहले सुन्नत के फरोग के लिए काम करें और मुआशरे में फैली हुई बुराइयों को ख़त्म करने की कोशिश करें

"उठो मंज़िल मिलेगी तो मज़े की नींद सो लेंगे
करो अब काम थोड़ा सा रोज़ाना अहले सुन्नत का"

तोहफा ए रमज़ान

अंदर पढ़ें

- रमज़ान की फ़ज़ीलत
- रोज़े के अहकाम
- तराबीह के मसाइल
- सदक़ा ए फ़ित्र

नाशिर

तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

9634735598,9720315389,9675801762